डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा-चकिया।

'पंत' का काव्यात्मक परिचय

प्रकृति के सुकुमार कवि पंत कहे जाते हैं। पंत की प्रारंभिक रचनाएं प्राकृतिक सौंदर्य से ओतप्रोत हैं। सौंदर्य निरूपण छायावाद की प्रमुख विशेषता है। 'वीणा' (1918 ई०), 'ग्रंथि' (1920 ई०), 'पल्लव' (1918 से 1925 ई०) एवं 'गुंजन' (1925 से 1935 तक) की कविताओं में सौंदर्य-चेतना का निरूपण हुआ है। पंत की कविताओं में सौंदर्य- नारी सौंदर्य, भाव सौंदर्य, शिल्प सौंदर्य एवं प्रकृति सौंदर्य के रूप में निरूपित है।

अपनी आरंभिक रचना में प्रकृति सुंदरी ने कवि को इतना मोहित कर रखा था कि वह प्रकृति के सौंदर्य को छोड़कर नारी-सौंदर्य की ओर उन्मुख ही नहीं होना चाहता था। यथा -

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले तेरे बाल जाल में
कैसे उलझा दूं लोचन?
छोड़ अभी से इस जग को"

पंत जी को प्रकृति चित्रण की एक विशेषता यह भी है कि उन्हें प्रकृति के कोमल और सुकुमार रूप ने ही

Scanned by CamScanner

अधिक मोहित किया है। प्रकृति के सुन्दर रूप ने उन्हें अधिक लुभाया है। पंत जी के काव्य में प्रकृति के सभी रूप उपलब्ध होते हैं। पंत बादलों को वर्णमय नेत्रों से देखते हैं और मुग्ध होकर अपनी अनुभूति प्रकट करते हुए कहते हैं –

"गहरे धुँधले धुले साँवले।
मेघों से भरे मेरे नयन॥"

पंत ने अपनी सुकुमार कल्पना का आश्रय लेकर नारी के नैसर्गिक सौंदर्य की मार्मिक झाँकी अंकित की है। नारी स्वर्गीय सुषमा से युक्त है तथा इस सौंदर्य में पावनता, उज्ज्वलता एवं सात्विकता विद्यमान है। उसी अलौकिक रूपवती का चित्रण करते हुए कवि कहता है –

तुम्हारे छूने में था प्राण, संग में पावन गंगा स्नान।
तुम्हारी वाणी में कल्याणी त्रिवेणी लहरों का गान॥

'युगान्त' में वह अपनी पिछली सौंदर्य चेतना से मुक्त होकर वैचारिक जगत में प्रवेश करता है। 'बापू के प्रति', 'ताज' आदि ऐसी ही रचनाएँ हैं। यह बदलाव बहुत कुछ स्वभाविक ढंग से नहीं आया बल्कि इस तरह की विचारधारा उस समय के मानस में व्याप्त हो रही थी। 'युगवाणी'

Scanned by CamScanner

में गाँधीवाद और मार्क्सवाद का स्पष्ट प्रभाव है। इसी संदर्भ में 'युगांत', 'युगवाणी' और 'ग्राम्या' में पंत जी ने प्रगतिवादी विचार से संबद्ध कविताएँ लिखी। उदाहरण हेतु 'गाज' कविता की पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

हाय! मृत्यु का ऐसा अमर, अपार्थिक पूजन?
जब विषण्ण, निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन!
संग-सौध में हो शृंगार मरण का शोभन,
नग्न, क्षुधातुर, वास-विहीन रहें जीवित जन?

'ग्राम्या' के बाद पंत का विकास एक विशेष दिशा आध्यात्मिक चिन्तन की ओर होता है जो उनके स्वयं का चिन्तन न होकर अरविन्द के चिन्तन संबंधी प्रभाव की ओर होता है। पंत की साधना की चरम उपलब्धि 'लोकायतन' है। इसका मूल प्रतिपाद्य सामूहिक मुक्ति है जो गाँधीवाद और अरविंद दर्शन से प्रभावित है।

इस प्रकार पंत की काव्य-यात्रा के जो विविध सोपान रहे हैं वे प्रकृति से मानव और फिर अंततः आध्यात्म है। पंत रसग्राही भाव साधक है, उसी के अनुरूप उनकी कविताओं में भाव की स्वच्छंदता, सूक्ष्म कल्पना, वर्णन-कौशल, लाक्षणिक काव्य-भाषा, मनोरम अलंकार विधान, लयबद्ध, छंद-सृजन आदि विशेषताएँ विद्यमान है

Scanned by CamScanner